International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मेवात के प्रसिध्द साहित्यकार भगवानदास मोरवाल के उपन्यास

मन्नू राम मीना
सह.आचार्य हिंदी
श्री संत सुन्दर दास स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय दौसा

सार

भगवानदास मोरवाल ने अपने कथा साहित्य में सामाजिक सम्बन्धों के प्रत्येक रूप को अभिव्यक्त किया है। उपन्यास काला पहाड़ और बाबल तेरा देस में दोनों की पृष्ठभूमि मेवात क्षेत्र है। ये वही मेवात है जिसने मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर से टक्कर ली थी और जिसने भारत की मिली–जुली तहजीब को आज तक सुरक्षित रखा ह। श्मेवश इस मेवात क्षेत्र का बहु संख्यक समुदाय है जो कि इस्लाम धर्म से है, पर वह अपने आप को एक मुसलमान के रूप में नहीं वरन् मेव के रूप में ही पहचानता है। विभाजन के समय गांधी जी के कहने पर पाकिस्तान न जाने वाले ये मेव मुसलमान अटल देश भक्त रहे हैं। अट्ठारह सौ सत्तावन में दो सौ अट्ठावन मेव जाति के लोग शहीद हुए थे। हसन खाँ मेवाती इनका प्रेरक व्यक्तित्व है, जिसने बाबर के साथ न देते हुए राणा सांगा का साथ दिया। मेव एक धर्म परिवर्तित मुसलमान जाति है जो हिन्दू से मुसलमान बने हैं। मूलरूप से कई हिन्दू जातियों से इनका सम्बन्ध रहा है। मेवों में आज भी हिन्दु–जातियों जैसे रीति–रिवाज पाए जाते हैं। मेवात क्षेत्र में हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मो के लोग एक इकाई के रूप में रहते आ रहे हैं। यह लोग हिन्दू हो या मुसलमान एक दूसरे के बिना किसी भेदभाव के काम आते हैं। सब लोग मिलकर रहते हैं और एक–दूसरे के सुख–दुःख के साथी हैं, ष्इस इलाके में आज तलक यामें कोई फिरकाना फसाद न हुओ है, सब सू बड़ी बात तो ई है कि या इलाका में हिन्दू और मेव एक कुणबा की तरह रहता आया है। साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास साहित्य ने सर्वाधिक आकृष्ट है। उपन्यास साहित्य पर बहुत शोध कार्य हुए हैं परंतु समाज के विविध पक्षों तथा आयामों से अध्ययन अभी तक बहुत कम अध्ययन हुआ है। भगवानदास मोरवाल ने साहित्य प्रत्येक विधा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य अपने समय का युग सत्य होता है। भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में युग के प्रति सचेतनता विद्यमान है। उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात् यह कहा जा सकता है ।

मुख्य शब्दरू साहित्यकारए भगवानदास मोरवाल एउपन्यास

प्रस्तावना

साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास साहित्य ने सर्वाधिक आकृष्ट है। उपन्यास साहित्य पर बहुत शोध कार्य हुए हैं परंतु समाज के विविध पक्षों तथा आयामों से अध्ययन अभी तक बहुत कम अध्ययन हुआ है। भगवानदास मोरवाल ने साहित्य प्रत्येक विधा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य अपने समय का युग सत्य होता है। भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में युग के प्रति सचेतनता विद्यमान है। उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि उपन्यासकार ने सामाजिक समस्याओं को बहुत ही समीप से देखा है। उपन्यासों के माध्यम से भगवानदास मोरवाल ने अपने समय, समाज और इतिहास को गहन दृष्टि से देखा और सृजित किया है। भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में समाज के विविध पक्ष तथा सामाजिक रिश्ते व समस्याओं का चित्रण मिलता है। साथ ही इन उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का समाधान भी दिखाई देता है।

समाज व्यक्तियों के समूह से मिलकर बना है। जिसमें धर्म, जाति, संप्रदाय, वर्ग के लोग रहते हैं। समाज की अपनी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परंपरा, मान्यता तथा रीति, नीतियां होती हैं जिनका पालन करना होता है। समाज में परिवार, संबंध, रिश्ते आदि से व्यक्ति जुड़ा रहता है। इन सबके साथ वह अपने अपने आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विरासत से भी जुड़ा हुआ है।

जीवन परिचय

भगवानदास मोरवाल का जन्म २३ जनवरी 1960 नगीना, मेवात में जन्मे भारत के सुप्रसिद्ध कहानी व उपन्यास लेखक हैं।

शिक्षा 10 वीं व 12 वीं में नगीना के राजकीय हायर सेकेंडरी स्कूल से पास करके बीए यासीन मेव डिग्री कालेज नूंह से की । राजस्थान विवि से हिंदी से एम ए और पत्रकारिता में डिप्लोमा किया। उर्दू भाषा का भी कोर्स किया । उन्हें पत्रकारिता में डिप्लोमा भी हासिल है।

इसके साथ ही शिक्षा में एम.ए. (हिन्दी), हिन्दी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला। , एम. फिल. (हिन्दी), हिन्दी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला। , पीएच.डी. (हिन्दी), हिन्दी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला। , यू.जी. सी.–नेट उत्तीर्ण किया।

व्यक्तित्व

भगवानदास मोरवाल असंख्य वंचित, उपेक्षित और अभावों में पले–पढ़े बच्चों की तरह रहा है, जिनके लिए लिखना तो दूर की बात रही, सलीक़े से पढ़ना भी एक बीहड़ चुनौती रही है. पढ़ने सेयहाँ तात्पर्य शिक्षा से और वह भी एक व्यवस्थित शिक्षा से रहा है. इस शिक्षा में सबसे बड़ी भूमिका हमारे सामाजिक और पारिवारिक परिवेश की होती है. शिक्षा के प्रति जो चेतना हमारे समाज में होनी चाहिए, उस तरह की चेतना उस दौर अथात सत्तर और अस्सी के दशक में कम–से–कम मेरे मेवात में नहीं थी. यह सुनकर भले ही आपको कुछ अटपटा लगे लेकिन यह सही है. इस चेतना के मूल में सबसे बड़ा कारक था आर्थिक पक्ष. इसलिए हमारे भारतीय समाज, विशेषकर गाँव–देहातों के आर्थिक रूप से विपिन्नपरिवारों मे व्यक्ति को एक अर्जक के रूप में देखा जाता है. उसे मात्र कमाई करने वाली एक इकाई के रूप में देखा जाता है. इसीलिए उसे सबसे पहले 'कमेरे' के विशेषण से नवाज़ा गया है. उसकी पढ़ाई–लिखाई को भी इसी रूप में देखा जाता है. इसलिए हमारे यहाँ अक्षर–ज्ञान यानि साक्षरता को ही शिक्षित होने का पर्याय मान लिया गया है. स्त्री के लिए तो यह और भी विचित्र है. उनके लिए शिक्षित होने का अर्थ है केवल अपनी कुछ धार्मिक या मज़हबी पुस्तकों का पढ़ना या फिर ज़्यादा हुआ तो घरेलू कार्य में दक्ष होना.।

अख़बार को तेरह–चौदह बरस की उम्र में पढ़ा. पढ़ते हुए भगवानदास मोरवाल को पहली बार यह एहसास हुआ कि आख़िर लोग अख़बारों को क्यों पढ़ते हैं. यह पहला अवसर था जब लगा कि हम एक छात्र के रूप में अपनी पाठ्य–पुस्तकों में जो पढ़ते हैं, उस पठन–पाठन की दुनिया कितनी व्यापक है. किसी बड़े लेखक की जो रचना पहली बार पढ़ी, वह अपने बचपन में शायद सातवीं कक्षा में पढ़ी और वह रचना प्रेमचंद की 'बड़े घर की बेटी'. इसी दौरान उन्होंने जिस बड़ी रचना को पढ़ा, वह था विलियम शेक्सपीयर के मशहूर नाटक 'मैकबेथ' का बालोपयोगी संस्करण. इसे पढ़ने की भी बड़ी दिलचस्प कहानी है और वो यह कि एक बार मैं अपने पड़ोस के ओमप्रकाश मेहता अर्थात ओमी मास्टर, जो पास के एक गाँव में प्राथमिक अध्यापक थे, गर्मियों में उनके साथ उनकी पाठशाला चला गया. उस समय यह पाठशाला किसी विधिवत् सरकारी भवन में नहीं, बल्कि एक पुराने मकबरे में चलती थी. इसी मकबरे के नीचे ख़ाली जगह में जहाँ एक तरफ़ इस गाँव के एक स्थानीय ग्वाले की भेड़–बकरियों का रेवड़ आराम

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

करना, वहीं पास में एक साफ़–सुथरी जगह में पाठशाला की कुछ बड़ी–बड़ी संदूकें रखी होतीं. इनमें से कुछ में पाठशाला का ज़रूरी सामान रखा होता, तो एक बड़े संदूक में बच्चों की किताबें रखी होती थीं. अगर इसे मैं यह कहूँ कि यह संदूक पाठशाला का पुस्तकालय था, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

उपन्यास लेखन

हरियाणा के मेवात प्रांत को समर्पित काला पहाड़ इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1999 ई. में हुआ। 466 पृष्ठों का यह बृहद् उपन्यास मोरवाल का प्रथम उपन्यास है, जो राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। काला पहाड़ की कथा भगवानदास मोरवाल के जीवनानुभवों से उपजी कथा है।

उपन्यास के क्षेत्र में मोरवाल ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए अब तक पाँच उपन्यासों क सृजन किया है। मोरवाल के उपन्यासों में ग्रामीण एवं उपेक्षित जन–समुदाय का चित्रण हुआ है, इस अतिरिक्त मुस्लिम बाहुल क्षेत्र मेवात के निवासी होने के कारण मोरवाल ने अपने उपन्यासों में मुस्लिम परिवारों की मर्मांतक कथाओं का भी विवरण प्रस्तुत किया है। "लेखक के रूप में भगवानदास मोरवाल की पहचान बहुत सघन रूप में मेवात से जुड़ी है। वे मेवाती समाज और संस्कृति के लेखक हैं। इस जीवन के जीवंत यथार्थ और मांसल चित्र उनके उपन्यासों में उपलब्ध हैं । मोरवाल के उपन्यास विश्वसनिय कथा–प्रसंगों द्वारा स्वतंत्रता पूर्व से लेकर वर्तमान संदर्भ में भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियों तथा सांस्कृतिक विभिन्नताओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं । उनके उपन्यासों में लेखकीय धैर्य एवं जानकारियों का साझा संसार प्रस्तुत हुआ है। अतः यहाँ लेखक के उपन्यासों पर एक दृष्टिक्षेप डालना आवश्यंभावी है।

1 काला पहाड़

सादल्ला के मेवात को समर्पित इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1999 में हुआ। 466 पृष्ठों का यह बृहद् उपन्यास मोरवाल का प्रथम उपन्यास है, जो राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। अब तक कहानियों द्वारा हिंदी साहित्य जगत् में उपस्थित हुए लेखक को इस उपन्यास ने विशेष रूप से परिचित कराया। स्वयं लेखक इस उपन्यास को अपनी सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक उपलब्धि मानते हैं।

काला पहाड़ की कथा मोरवाल के जीवनानुभवों से उपजी कथा है। उपन्यास में वर्णित घटनाओं को लेखक मात्र एक दृष्टा के रूप में ही नहीं देखता अपितु उन घटनाओं के यथार्थ को स्वयं लेखक ने जिया भी है। साझा संस्कृति के बीच सांप्रदायिक तणाव जनित विघटन इस उपन्यास के कथ्य का आधार है।

उपन्यास की पृष्ठभूमि में मेवात है। मेवात के निवासी मेव, जो धर्म परिवर्तित मुसलमान हैं। उपन्यास में बुजुर्ग एवं युवा पीढ़ी के बीच वैचारिक मत–मतांतरों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान युवा पीढी को धार्मिक सांप्रदायिक संक्रमण की अवस्था में अपने अस्तित्व की तलाश करते हुए दिखाया गया है।

उपन्यास की कथा में सामान्य जन का राजनीति के ठेकेदार, प्रशासन एवं पुलिस द्वारा शोषण करने की चरम् परिणति यह होती है, कि हिंदू–मुस्लिम वैमनस्य बढ़ता जाता है। अपासी विश्वास की नींव चरमराकर ढह जाती है। मेवात के शांति एवं सौहादपूर्ण वातावरण पर अशांती एवं दुश्चिंताओं के बादल घिरने लगते हैं। तथाकथित फिरकापरस्त ताकदें इसी बीच अपना स्वार्थ साध्य करने को ललायित दिखाई देती हैं। ष्मारवाला ने श्काला पहाड़श में जगह–जगह पर प्रसंगवश इस ऐतिहासिक तथ्य का उल्लेख किया है कि मेवात आज जो अशांत है और यहाँ तक कि यह दूसरा पाकिस्तान बनने की आशंका से त्रस्त है तो दरअसल इसके मूल में यह महत्वाकांक्षी मध्यवर्ग ही है जो फिरकापरस्त

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ताकतों का एजेंट बना अवसर का लाभ उठा रहा है।

मेवात की जनता अनपढ़ है। हिंदुओं की तुलना में मेव समुदाय रोजगार के अभाव में दरिद्रतापूर्ण जीवन यापन करने को विवश है। सरकार द्वारा चलाई जाने वाली विकास की योजनाएँ मात्र फाईलों में धरी की धरी रह जाती हैं। जन सामान्य को विकास की मुख्य धारा में समाविष्ट होने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान नहीं किया जाता। उनके जीवन में अभाव तथा समस्याओं ने ऐसा स्थान बना लिया है कि मेवात के सभी परिवारों की दशा एक सी ही प्रतीत होती है। अपर्याप्त रोजगार के कारण ग्रामीण जन शहर की ओर विस्थापित होता हुआ दिखाई देता है। अन्यान्य प्रवासों के उपरांत थके–हारे मेवाती नियति से समझौता कर लेते हैं। "विकास एवं रोजगार के अभाव में पलायन यहाँ की एक बड़ी समस्या बन गयी है। कुल मिलाकर विकास के अभाव से जो एक प्रकार की किंकर्तव्यविमूढ़ता और शून्य जैसी स्थिति यहाँ पैदा हुई है, उसने फिरकापरस्त ताकतों को यहाँ अपने पैर फैलाने का भारी स्पेस दिया है। इस शून्य को भरने के लिए वे एकदम तत्पर दिखाई देती हैं । दरिद्रता और तत्ववाद का सीधे–सीधे चाहे कोई संबंध न हो लेकिन धीरे–धीरे ये एक दूसरे को आगे बढ़ाने में मशगूल हो जाते हैं।

मेवाती समाज एवं संस्कृति हिंदुओं से अधिक निकट है। ये न पूरे मुसलमान हैं, और न पूरे हिंदू हैं। उपन्यास के पूर्वार्ध में लेखक ने मेव समुदाय की सांस्कृतिक संपन्नता, ऐतिहासिक विरासत, देश भक्ति एवं सादगी के प्रमाण देने वाले प्रसंगों का वर्णन किया है। कथा के उत्तरार्ध में यही साझा संस्कृति सांप्रदायिक तणाव के बीच संघर्षरत दिखाई देती है। उपन्यास का नायक सलेमी इस संघर्ष का प्रत्यक्ष दृष्टा है। बिगड़ती स्थितियों को सँभालने के सलेमी के सभी प्रयास सांप्रदायिक ताकदें पस्त कर देती हैं। सलेमी का संघर्ष मात्र साझा संस्कृति की रक्षा तक सीमित न होकर एक आदर्श नायक के रूप में धैर्य एवं साहस से परिपूर्ण बन पड़ा है।

स्वार्थ एवं सुरक्षा के लिए मेवाती समाज में धार्मिक विद्वेष उत्पन्न होता है, जिसका लाभ चौधरी करीम हुसैन और अतर मोहम्मद जैसे कुटिल राजनेता उठाते हैं। वास्तविकता यह है कि मेवात की साझा संस्कृति में धार्मिक अलगाव के बीज बोने वाले ऐसे ही राजनेता हैं। अपनी घुटन, तकलीफ एवं जान–माल की हानी को बयाँ करता मेवाती समाज अपने अस्तित्व की तलाश करता प्रतीत होता है।

"धार्मिक कट्टरता एवं सांप्रदायिक उन्माद की अंध गलियों में मेवाती मजहब से मुँह चुराते और आधुनिकता की होड़ में लोकसंस्कृति के परिवर्तित स्वरूप के कारण विलुप्त होती मेवाती संस्कृतिक विरासत अथवा तली में बैठते समाज की दास्तान को उकेरने का लेखक ने एक जागरूक प्रयास किया है। सत्ताधारी मेवातियों को धार्मिक संघर्ष की ज्वाला में झोंक देते हैं। मेवात में आधुनिक शिक्षा के स्थान पर धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे राजनेता अपना वोट बैंक सुरक्षित करने में लगे हुए हैं। जमात के प्रमुख मौलवी साहब का कथन दृष्टव्य है– चौधरी साहब, हम चाहते हैं कि मेवात के मुसलमानों को इस्लाम की तालीम दी जाए... हमने पूरे इलाके में घूम कर देखा है और यह गौर किया है कि यहाँ के मुसलमानों में मजहब में कोई खास दिलचस्पी नहीं है.... 1935 ध्यातव्य है कि, मुल्ला–मौलवी एवं नेताओं की साँठ–गाँठ ने धर्म के नाम पर जन–सामान्य को बहकाकर सांप्रदायिक शक्तियों को बढ़ावा देने का कार्य किया है। युवा पीढ़ी बड़ी सरलता से इस बहकावे में आ जाती है।

परंतु बुजुर्ग पीढ़ी अलगाववादी तंत्र की फूट डालो और राज करो की नीति से भली–भाँति परिचित है। प्रदेश के मुख्यमंत्री स्वयं इस बात की साक्ष देते हैं कि संपूर्ण देश की तुलना म मेवात में शांति और सौहार्द का वातावरण है तो वह मात्र इसीकारण है कि मेवातियों में हिंदुओं के संस्कार हैं। मेवों में देश के प्रति प्रेम है–"मुझे यह देखकर बड़ी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

खुसी होती है कि जब आज पूरे देस में दंगे–फसाद हो रहे हैं तो इस इलाके में पूरी सांति है... इसका मुख्य कारण मुझे यही लगता है कि आपमें अभी तक हिंदुओं के संस्कार भरे पड़े हैं... जैसाकि चौधरी करीम हुसैन ने बताया है कि उनके मरहूम पिता चौधरी अमीन खाँ ने बँटवारे के समय हिंदूओं की रक्षा करते हुए कहा था कि पहले वे हिंदू हैं, मेव बाद में ये सबद उन्हीं संस्कारों की देन हैं ...

मेवात के ग्रामीण जीवन के विविध पहलुओं को स्पर्श करता यह उपन्यास खाँटी मेवात की कहानी कहता है। यहाँ जनतंत्र केवल नाममात्र का है। चुनावी माहौल की गहमागहमी में मेवात प्रदेश भारत के अन्य प्रदेशों की ही तरह है, परंतु स्थानिक लोक संस्कृति एवं सौहार्द के विषय में मेवात समग्र भारत से सर्वथा भिन्न प्रतीत होता है। मेवात का इतिहास साक्षी है कि यहाँ कभी भी अपनापन एवं आपसी सौहार्द बाधित नहीं हो सका है। हसन खाँ मेवाती से लेकर गाँधी तक ने मेवातियों के इसी सौहार्द की प्रशंसा की है। एतिहासिक पात्र हसन खाँ मेवाती ने बाहर से आए मुगल बादशाह बाबर के पक्ष में लड़ाई न लड़कर अपनी कौम और अपने भाईयों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे डाली। वहीं गाँधी भारत विभाजन के उपरांत पाकिस्तान जा रहे मेवातियों को रोकने के लिए उनके रास्ते में लेट गए थे।

उपन्यास में सांस्कृतिक ऐक्य तथा सांप्रदायिक तणाव की पृष्ठभूमि पर लेखक ने मेवाती जन– जीवन का सजीव चित्रण किया है।

2 वंचना उपन्यास

भगवानदास मोरवाल जी का सन 2019 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ वंचना यह सातवा उपन्यास है। यह उपन्यास दुनिया की आधी आबादी का वह सच सामने लाता है, जिसे लोकतंत्र की न्यायवादी प्रक्रिया के पीछे अँधेरे की तरह वंचित करके रखा गया है। पितृसत्ता की चालाकियों ने बहुत व्यवस्थित ढंग से उसके शोषण की सारणियाँ तैयार की हैं। वर्तमान समाज के राजनीतिक एजेंडे में भल ही बेटी पढ़ाओ और बेटी बचाओ की मुहिम शामिल है, किंतु तमाम सत्ताएँ उसे बिस्तर पर खींच लेने को आमादा है। हाल ही में आई आदर्श बहु निर्माण की खबरें भले ही किसी दृश्यमान एजेंडे में शामिल न हों, किंतु वर्षों से समाज ऐसी ही स्त्री की कल्पना करता आया है। उसके लिए घर की चहारदीवारी दरअसल उसे महफूज रखने की एक तयशुदा साजिश है। स्त्री के चारों ओर की गई इस किलेबंदी में धर्म ने हमेशा ही एक मजबूत पहरेदारकी भूमिका निभाई है। कभी भय का पहाड़ा पढ़ाकर, कभी परलोक की ज्यामिती सिखाकर, कभी पतिव्रता की त्यागमयी लोकोक्तियाँ रटवाकर । हालाँकि उसका मकसद हमेशा ही बराबरी के मोर्चे पर उसे फतह करना रहा है। मोरवाल ने अपने इस उपन्यास में लोकतंत्र के तीसरे स्तम्भ न्यायपालिका के सामने इंसाफ के लिए कुलबुलाती ऐसी स्त्रियों की कथा को चुना है, जिन्हें सामाजिक संरचना की जटिलताओं ने मौत के मुहाने पर ला खड़ा किया है और न्यायमूर्ति की आँखों से पर्दा हटाए नहीं हट रहा है।

3 शकुन्तिका उपन्यास

हिंदी के आधुनिक ग्रामीण लोक–जीवन के कुशल चितेरे भगवानदास मोरवाल जी का शकुन्तिका यह रचनाक्रम की दृष्टि से आठवाँ उपन्यास है। यह उपन्यास वर्ष 2020 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। विवेच्य उपन्यास महज 121 पृष्ठों का लघु उपन्यास है जिसमें उपन्यासकार ने भारतीय समाज में बेटा–बेटी के जन्म एवं महत्त्व को कथानक का आधार बनाया है। भारत में मूलतः पुरुषप्रधान मानसिकता के चलते बेटे को कुल का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दीपक माना जाता है। वंश की वृद्धि और अपनी विरासत को आगे बढाने की एक संकुचित मानसिकता के चलते बेटे के जन्म को लेकर दो महिलाओं का भावनिक एवं वैचारिक द्वंद्व प्रस्तुत उपन्यास में देखने मिलता है। भारतीय समाज में एक ओर बेटियों को घर की लाड़ली, कुल की शान, गृह लक्ष्मी और देवी तक माना जाता हैं वही दूसरी ओर जब उसे समान दर्जा देने की बात आती है तो उसे पराया धन और पुरुष से कम आँका जाता है। भारतीय समाज के इसी अंतर्विरोध को भगवानदास मोरवाल ने उपन्यास की प्रमुख पात्र भगवती और दुर्गा के परिवार की कहानी के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश की है। पुरुष और स्त्री परिवार रूपी रथ के दो पहिए होने के बावजूद परिवार में पुत्र जन्म काही मोह क्यों ? पुत्र ही कुल का दीपक क्यों ? क्या लड़की कुल की उद्धारक नहीं हो सकती ? पुत्र कुल का दीपक है तो वृद्धाश्रमों की संख्या क्यों बढ रही है ? जहाँ बेटियाँ हैं, उनके माता–पिता कभी वृद्धाश्रम क्यों नहीं जाते? इन बुनियादी और अहम सवालों के जवाब विवेच्य उपन्यास को पढने के बाद मिलते हैं।

उपन्यास संबंधी मान्यताएँ

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपन्यास काला पहाड़ और बाबल तेरा देस में दोनों में मेवाती समाज का यथार्थ चित्रण हुआ है। विभिन्न सम्प्रदायों के लोग यहां एक इकाई के रूप में रहते हैं। इनके सामाजिक सम्बन्ध आपसी प्रेम, सद्भावना और एकता पर आधारित हैं। जिसका सबसे बड़ा कारण यह है कि मेवात हिन्दू – मेव सांझी संस्कृति वाला क्षेत्र है। श्यामचरण दूबे ऐस क्षेत्र को सांस्कृतिक क्षेत्र कहते हैं। उनका कहना है कि ष्ऐसे क्षेत्र में लोगों का नृजातीय मूल, भाषा और सांस्कृतिक विशेषताएं समान हो सकती हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण है उनका सांझा ऐतिहासिक अनुभव, परिस्थितियाँ और पर्यावरण।

अतः जिस समाज व क्षेत्र में सांस्कृतिक एकता, समान भाषा तथा सांझा ऐतिहासिक अनुभव व परिवेश हो वहां विविधता में एकता स्थापित रहती है। एक अटूट रिश्ता हिन्दू और मुसलमान के बीच पूरे मेवात में दिखाई पड़ता है। जहां नाम से कोई सलेमी हो, कोई असलम हो, कोई बनवारी हो, कोई मनीराम हो। दोनों की दिनचर्य अजान से शुरु होती है और अजान के साथ खत्म होती है।

जन्म से मृत्यु तक दोनों का जीवन बहुत हद तक एक ही तरह चलता है। इनकी आपसी सद्भावना का दूसरा कारण यह है कि यहां हिन्दू और मुसलमान सदियों से इकट्ठे रहते आ रहे हैं परिणामस्वरूप इनके सामाजिक सम्बन्धों में अपनत्व का भाव उत्पन्न हुआ, जिसे ये लोग अब तक कायम रखते आ रहे हैं। आधुनिक युग में जब धर्मवाद फैलता जा रहा है इस के बावजूद मेवात में सांझी संस्कृति बरकरार है। आयोध्या त्रासदी के पश्चात् घटी हिंसात्मक घटनाएं मेवात की इस सांझी संस्कृति को नुकसान तो पहुंचाती हैं किन्तु उसे खत्म नहीं कर पाती। इस समाज की युवा पीढ़ी के बाबू खाँ, सुभान खाँ जैसे युवक ही सम्प्रदायिक ताकतों से मिलकर इलाके में तनाव पैदा करते हैं।

इसका एक बड़ा कारण यह है कि नई पीढ़ी आजादी की कोख से आई है इसीलिए उस पर साम्प्रदायिकता और अलगाववाद का गहरा प्रभाव है, इस गहरे प्रभाव के पीछे स्वार्थी राजनीतिज्ञों का भी बहुत बड़ा हाथ है। परन्तु बुजुर्ग पीढ़ी अभी भी साम्प्रदायिकता, धर्मवाद आदि से अछूती है। भटके युवाओं को वे समझाते हैं, ष्बेटा इन कामन में कुछ भी न धरो है.... अरे, हाजी असरप जैस आदमी न तो आज तलक कोई न सगा हुआ है, और न होंगा। बेटा ये तो ठाड़ा आदमी है इनको कुछ नि बिगडेगो..... पर तम जैसा बोदा और भोला माणस आपणा घर कू उल्टा हो लेओ..... पुरानी पीढ़ी सदियों से चले आ रहे भाईचारे को खत्म नहीं करना चाहती। सलमी बाबरी मस्जिद गिराए जाने पर उस विदेशी हमलावर के प्रतीक के नष्ट होने पर खुश होता है। मनीराम आर्य समाज मंदिर के स्वामी के मारे जाने पर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

खुश होता रहता है, ष्चलो अच्छो हुओ, कटी कलेश... कम से कम एक मुसीबत सू तो पीछे छूटो या इलाका को... । मेवात की सांझी संस्कृति की यही विशेषता है जो मेवात को टूटने से बचाए रखने की निरंतर कोशिश करती है। उसका तीसरा कारण यह है कि उपन्यास श्काला पहाड़ और बाबल तेरा देस में दोनों मेवात क्षेत्र के ग्रामीण समाज की बात करते हैं। हमारा भारत देश गाँवों का देश है। इसलिए इसकी आत्मा और इसका नैसर्गिक सौन्दर्य गाँवों में है। ग्रामीण समाज में सामाजिक सम्बन्धों का रूप अधिक प्रत्यक्ष और गहरा होता है। सम्बन्धों में पाई जाने वाली सामुदायिक भावना ग्रामीण लोगों को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। इस सम्बन्ध में फेचर चाईल्ड कहते हैं कि, ष्ग्राम पड़ोस की अपेक्षा विस्तृत क्षेत्र है, जिसमें आमने सामने के सम्बन्ध पाए जाते हैं।

जिसमें सामूहिक जीवन के लिए अधिकांशतः सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं अन्य सेवाओं की आवश्यकता होती है, जिसमें मूल आवृत्तियों एवं व्यवहारों के प्रति सामान्य सहमति होती है। ष इस प्रकार गांवों में संगठन के मुख्य आधार समान सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषताएं, हम की भावना, सहयोग तथा अभिन्नता की भावना ग्रामीण लोगों में विकसित होकर उन्हें साथ रहने के लिए प्रेरित करती है। गांव के लोगों में शहरी लोगों की अपेक्षा आपस में ज्यादा मेल–मिलाप होता है। गांव के सभी लोग एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं और उनकी एक–दूसरे के प्रति हमदर्दी भी रहती तथा आवश्यकता पड़ने पर वे एक दूसरे की पूरी सहायता करते हैं। ष

निष्कर्ष

भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में युग के प्रति सचेतनता विद्यमान है। उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि उपन्यासकार ने सामाजिक समस्याओं को बहुत ही समीप से देखा है। उपन्यासों के माध्यम से भगवानदास मोरवाल ने अपने समय, समाज और इतिहास को गहन दृष्टि से देखा और सृजित किया है। भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में समाज के विविध पक्ष तथा सामाजिक रिश्ते व समस्याओं का चित्रण मिलता है। साथ ही इन उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का समाधान भी दिखाई देता है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि मोरवाल जी ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त राष्ट्रीय भावना क स्वरों को जागृत करने का सशक्त प्रयास किया है। उनका मानना है कि आज की राजनीति का स्थान वैसा ही है जैसा मध्ययुग में धर्म का था । राजनीति ने धर्म एवं संप्रदाय को आधार बनाकर समाज में तनाव, भय व आतंक को जगह दी है जिससे जनता के मन में अपने अधिकारों तथा सरक्षा के प्रति संदेह बना रहता है और वह अनगिनत समस्याओं से झूझते हुए नज़र आते हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

अग्रवाल, डॉ शन्नो देवी– स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में समकालीन राजनीति, ग्रंथायन, सर्वोदय नगर, अलीगढ़, 1984

अवस्थी, डॉ. कृष्ण– वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन, पुस्तक संस्थान, नेहरू नगर, कानपुर, 1975

उपाध्याय, हरिभाऊ – बदलते संदर्भ और साहित्यकार, राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, 1976

कीर्ति, केसर– स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन, नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली, 1982

डॉ. कौर, वरिंदरजीत – भगवानदास मोरवाल का कथा साहित्य, के. के. पब्लिकेशन्स, 4806/24, भरतराम मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 10, October- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

खराटे डॉ. मधु (संपादक) – उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल, विद्या प्रकाशन, कानपुर–22

गंभीर, डॉ सिमानी– साठोतरी हिंदी काव्य में राजनीतिक चेतना

गर्ग, भैंरूलाल– स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में सामाजिक परिवर्तन, चित्रलेखा प्रकाशन, दिल्ली, 1982

गुप्त, डॉ बालकृष्ण – हिंदी उपन्यास सामाजिक संदर्भ, अभिलाषा प्रकाशन, कानपुर, 1978

गुप्ता, डॉ हुकुमचंद, आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य, भारतीय संस्कृति भवन, जालंधर,1970

गुप्ता, डॉ लोकेश कुमार (संपादक) – रेतरू अनुशीलन के विविध आयाम, श्री नटराज प्रकाशन, नयी दिल्ली

गुप्ता डॉ. लोकेश कुमार (संपादक)– लोकमन का सिरजनहाररू भगवानदास मोरवाल, समीक्षा पब्लिकेशन, गाँधी नगर, दिल्ली–31

गोयल, डॉ अनिल हिंदी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका, आर्यन पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली1985

गोस्वामी, क्षमा नगरीकरण और हिंदी उपन्यास, जयश्री प्रकाशन, दिल्ली, 1981

चतुर्वेदी, महेंद्र– हिंदी उपन्यासरू एक सर्वेक्षण नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1982

जैन, अर्चना– प्रेमचंद के निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, कृष्णा नगर दिल्ली,1984

देसाई, डॉ पारूकांत– साठोत्तरी हिंदी उपन्यास, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, 1984